International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 29-07-2021, Accepted: 15-08-2021, Published: 30-08-2021
Volume 3, Issue 3, 2021, Page No. 53-54

अखिल भारतीय जनमानस का महाकविः गोस्वामी तुलसीदास

अर्चना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय अखिल भारतीय जनमानस के 'हृदय के हार' गोस्वामी तुलसीदास के काव्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालना है । प्रस्तुत शोध–आलेख का साध्य गोस्वामी जी के सकल कृतित्व के आधार पर भावगत सौंदर्य का विवेचन प्रस्तुत करने के साथ–साथ उनके काव्य की समसामयिक परिस्थितियों में उपयोगिता को आलोकित करने के प्रयास–मात्र से है।

मूल शब्दः गोस्वामी, साहित्येतिहास, दस्तावेज, अनासक्त कर्म, कर्त्तव्य बोध

प्रस्तावना

मेरा व्यक्तिगत मत है कि पूजनीय गोस्वामी जी की काव्य–प्रतिभा किसी प्रकाशकीय वर्ग एवं लेखकीय मोहल्लों की मोहताज नहीं है बल्कि प्रेरणा का असीम स्रोत रही है। यहाँ कहना 'अत्युक्ति' न होगा कि मेरा अभिप्राय "न भूतो न भविष्यति" से है।

राजापुर (बाँदा) की धरा पर जन्मा माँ सरस्वती का लाडला पुत्र –रामबोला' (तुलसीदास) हुलसी एवं आत्माराम दुबे की संतान के रूप में अवतरित हुआ। ज्ञानार्जन के रूप में चारों वेद, षड्दर्शन, इतिहास, पुराण, स्मृतियाँ, काव्य–कला आदि की शिक्षा काशी में 15 वर्षों तक अर्जित की। समय बीता और गोस्वामी जी काश में विद्याध्ययन के उपरांत जन्मभूमि आकर कथावाचक व्यास बन गए।

यह गुण देख दीनबंधु पाठक ने व्यक्तित्व और ओज से प्रभावित होकर अपनी पुत्री रत्नावली से विवाह कर दिया। पत्नी से प्रगाढ़ प्रेम और आसक्ति के कारण फटकारे जाने पर विरक्त हो गए और गृहस्थ जीवन की गलियों से निकल संतत्व को प्राप्त हुए। यूँ तो गोस्वामी जी का मूल निवास काशी में ही माना जाता है किंतु यदि साहित्येतिहासिक ग्रंथों का अध्ययन और साहित्यिक दस्तावेजों को खंगालें तो ज्ञात होता है कि गोस्वामी जी द्वारा सूकरखेत, अवध, चित्रकूट, प्रयाग, मथुरा–वृन्दावन, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, बद्रीनाथ, नैमिषारण्य, मिथिला, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर आदि प्रमुख तीर्थों की यात्राएँ भी समय–समय पर संपन्न कीं। गोस्वामी जी का मत था–

अगुन, अरूप, अलख, अज होई,
भगत प्रेम बस सगुण सो होई।।

समकालीन राजनीतिक घटकों से पूर्व साहित्यकारों की ओर रुख करें तो पर्याप्त जानकारी से ज्ञात होता है कि अब्दुर्रहीम खानखाना, महाराजा मानसिंह, नाभादास, दार्शनिक मधुसूदन सरस्वती, टोडरमल आदि समकालीन सहधर्मी थे।

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी के मध्यकालीन भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा की रामभक्ति शाखा के सिरमौर कवि हैं।गोस्वामी तुलसीदास 'विनय पत्रिका में लिखते हैं–

राम सों बड़ो है कौन, मौसों कौन छोटो ।
राम सो खरो है कौन,मौसों कौन खोटो । ।

तुलसीदास स्वयं 'अकबर' के समकालीन थे। यह एक दौर था जब भारतीय इतिहास बारहवीं से पंद्रहवीं सदी के मध्य करवटे ले रहा था।

इसे पूर्व मध्यकाल कहकर संबोधित किया गया। इस दौरान रामानुज, माधव, निम्बार्क, वल्लभ, चौतन्य आदि भक्ति के चार प्रमुख संप्रदायों की प्रतिष्ठापना कर चुके थे। यह प्रखर परंपरा आलवार, आंडाल, चंडीदास तथा नरसी मेहता द्वारा चलायमान थीय जिसने अखिल भारतीय स्तर पर एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया। जल्द यह विचार आंदोलन बन गया, जिसने संपूर्ण भारत को प्रभावित किया।

गोस्वामी जी ने अपने रचनाकर्म में 'मानवीय करुणा' एवं 'कर्त्तव्य बोध' की बेजोड़ स्थापना की। सांगरूपक का एक दृष्टांत स्मरण हो आता है –

पुरइनि सघन चारू चौपाई,
जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई।
छंद सोरठा सुंदर दोहा,
सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा।
अरथ अनूप सुभाव सुभासा।
सोई पराग मकरंग सुबासा।
औरव कथा अनेक प्रसंगा,
तेइ सुक पिक बहुबरन बिहंगा।।

भक्ति एक प्रकार अनासक्त कर्म है और धर्मानुकूल आचरण की जीवन शैली है और गोस्वामी जी इन दोनों के निर्देशक हैं। वे कहते हैं –

"नामु राम को कलपतरु
कलि कल्यान निवासु
जो सुमिरत भयो भांग
तें तुलसी तुलसीदासु।।''

भक्ति की पावन धारा को गोस्वामी जी ने उदार भाव से बाँटा है और लोकभाषा को माध्यम बनाकर राम की रंजित कथा को जन–जन तक निर्बाध गति से पहुँचाया है। इस कारण 'मानस' को सार्वजनीन स्वीकृति मिली है। गोस्वामी जी अपने विशाल हृदय के कपाट खोलकर राम भाव की उपस्थिति प्रस्तुत करते हैं –

"जड़ चेतन जग जीव जगत
सकल राममय जानि।
बंदउ सबके पदकमल सदा
जोरि जुगि पानि।"

चंद मत इस शंका को लेकर प्रत्यक्ष हो जाते हैं कि गोस्वामी जी द्वैतवादी हैं या अद्वैतवादी ? मैं स्वयं गोस्वामी जी की पंक्तियों को ही दृष्टांत स्वरूप प्रत्यक्ष रख रही हूं –

"एक अनीह अरूप अनामा
अज सच्चिदानंद पर धामा
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना
तेहिं धरि देह चरित कृत नाना
सो केवल भगतन हित लागी,
परम कृपाल प्रनत अनुरागी।"

गोस्वामी जी सकल जगत के कल्याण की कामना करते नजर आते हैं –

"कीरति भनिति भूति भलि सोई
सुरसरि सम सब कह हित होई।"

किंतु स्मरणीय है कि वह कर्त्तव्य का पथ विस्मृत नहीं करते । यह भी कहते हैं दृ

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।
सो नृपु अवसि नरक अधिकारी ।।

इसमें संशय नहीं कि 'मानस' शिक्षित–अशिक्षित सब के लिए है और भक्ति के अवलंबन के साथ सबका आधार बन जाता है जहाँ पहुंचकर श्रांत और क्लांत मनुष्य को 'विश्राम का ठौर' मिल जाता है।
शायद ... इस कारण ही गोस्वामी जी को 'विश्राम' पद परम प्रिय है। इसका बहुतायत प्रयोग हुआ है –
"बुध बिश्राम सकल जनरंजनि
राम कथा कलि कलुष बिभंजनि।"
लोगों को सहज सुख नहीं मिलता, क्योंकि इंद्रिय विषयों में निमग्न होने पर अंततः बैचेनी ही हाथ लगती है –
"जतन अनेक किए सुख कारन,
हरिपद बिमुख सदा दुःख पायो।"
परंतु जब सूखी धरा को ईश्वरी कृपा रूपी वर्षा मिलती है तो समस्त क्लेश दूर हो जाते हैं। फिर भले ही ईश्वर निमित्त रूप धारण कर सामने प्रकट हों और उद्धार करें –

"तब प्रसाद प्रभु मम उर माही
संसय शोक मोह भ्रम नाहीं।"

अतः रामकथा का श्रवण–मात्र समस्त क्लेश से विरत कर देता है –

"राम चरित मानस एहि नामा,
सुनत श्रवण पाइअ विश्रामा।
राम चरित सर बिनु अन्हवाए
सो श्रम जाई न कोटि उपाएं।"

निष्कर्ष

गोस्वामी जी ज्ञान और भक्ति का सामंजस्य प्रस्तुत करते है –

"जानें बिनु न होई परतीती।
बिनु परतीती होई नहीं प्रीती।"

अनेक प्रसंगों में 'विरुद्धों का सामंजस्य' भी कल्याणकारी सिद्ध होता है। 'रामचरितमानस' में समुद्र–प्रसंग के द्वारा दृष्टांत प्रस्तुत कर रही हूं–

"विनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होय न प्रीति।।"

अस्तुय आग्रह–स्वरूप इस पर विवेक की ऐनक से दृष्टिपात करना समीचीन एवं वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक सिद्ध होगा।

संदर्भ

1. रामचरितमानसः तुलसीदास, उत्तरकाण्ड–109
2. विनय पत्रिकाः तुलसीदास, पृष्ठ.106
3. रामचरितमानसः तुलसीदास, 2/70/6